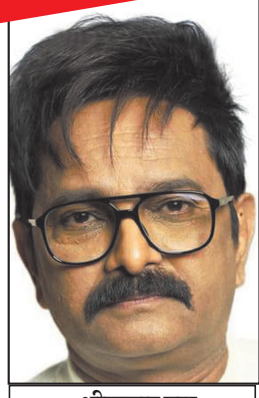


### कहानी



श्रीकुमार दत्त

जिस दिन सोम्यब्रत छठी कक्षा में हमारे स्कूल में आया, हम सब बाकी बच्चे दंग रह गए. गौरा रंग, करीने से कंधी किए हुए बाल. एक स्वस्थ रूप जो उत्तर प्रदेश के हमारे छोटे से कस्बे में देखने को नहीं मिलता. महंगे फेम वाला चश्मा, करीने से प्रेस की हुई स्कूल यूनिफॉर्म. मैं पूरे सप्ताह एक ही यूनिफॉर्म पहनता हूँ रविवार को उसे धोता हूँ और सोमवार से पुनः पहनता हूँ. प्रेस करने की कोई परंपरा नहीं है. उसके पैरों में पॉलिश किए हुए और चमकदार जूते हैं. मेरे जूते दो साल पुराने हैं. पिताजी ने उन्हें एक साइज बड़ा खरीदा था ताकि अगर वे पूरी तरह फट न जाएं तो उन्हें हर साल खरीदना न पड़े. बाद में मुझे पता चला था कि सोम्यब्रत की यूनिफॉर्में और जूते, दोनों ही जोड़े हैं. धोबी हर तीन दिन में यूनिफॉर्म धोता और इस्त्री करता है और मोची हफ्ते में एक बार जूते पॉलिश करने आता है. अपने चश्मे की वजह से सोम्यब्रत की स्थायी सीट पहली बेंच पर थी. उसके टीक पीछे में बैठा करता था. उसके शरीर से आती महंगे परफ्यूम की मीठी खुशबू पूरी वक्तास को मंत्रमुग्ध कर देती थी. सोम्यब्रत का स्कूल में अलग ही स्थिति थी. उसके पिता एक बड़े बैंक में मैनेजर थे जो गुवाहाटी से ट्रांसफर होकर हमारे शहर आए थे. जब भी वे हमारे स्कूल आते, प्रिंसिपल सर उनका गर्मजोशी से स्वागत करते. चाय पर बात करते. सोम्यब्रत बंगाली होते हुए भी एकदम सही हिंदी बोल लेता था. और उसकी फर्राटदार अंग्रेजी! हम उसके आस-पास भी नहीं पहुँच पाते थे. लेकिन वह अक्सर स्कूल नहीं आता था. और अपनी अनुपस्थिति का कारण बताते हुए एक मजबूत अंग्रेजी वाला आवेदन पत्र देता था जिस पढ़कर वक्तास टीचर चुप हो जाते थे. लेकिन वे हममें से दूसरे मेधावी छात्रों को आदेश देते थे कि वे सोम्यब्रत को उसकी अनुपस्थिति के दिनों के वक्तास नोट्स दे दें. वे भी बिना कुछ कहे आदेश का पालन करते थे. बेशक, स्कूल के बाद सोम्यब्रत उनके लिए आइसक्रीम, पानीपूरी या समोसा का तोहफा जरूर रखता था. इतना ही नहीं, एक बार जब सोम्यब्रत अपने माता-पिता के साथ मुंबई आए और गाँव की दो हफ्ते की यात्रा पर गया, तो वक्तास-प्रिंसिपल के आदेश पर कभी छात्रों ने बारी-बारी से अलग-अलग विषयों पर नोट्स लिखे. जल्द ही हमारी पहली टर्म की परीक्षाएं आ गईं. जब नतीजे आए तो पता चला कि सोम्यब्रत ने अंग्रेजी में सबसे ज्यादा नंबर हासिल किए थे और बाकी विषयों में भी बहुत अच्छा था. लेकिन गणित में उसके नंबर बहुत खराब थे. आश्चर्य

की बातएं अगले ही दिन से हमारे वाइस प्रिंसिपल ने उसे टयूशन देना शुरू कर दिया! उसके बाद किसी भी विषय में कोई भी सोम्यब्रत को मात नहीं दे सका.

सोम्यब्रत को हमारी भोजपुरी हिंदी समझ में नहीं आती थी, इसलिए स्कूल में उसकी किसी से खास दोस्ती नहीं हुई. उसकी अमीरी की वजह से हम भी एक तरह की हीन भावना से ग्रस्त थे. एक दिन ऑफ पीरियड के दौरान लोड शीडिंग हो गई. जाहिर है, यह रोज की बात थी. लेकिन उस दिन सोम्यब्रत ने अपने स्वभाव के विपरीत कुछ किया. अचानक, वह गीदड़ की तरह ऊँची आवाज में चिल्लाया. बस. प्रिंसिपल सर घबड़ाते हुए वक्तास में आए और मुझे आगे पाकर, मेरे बाल फड़ककर पीठ के बल चार घूँसे मारे. मैं हक्का-बक्का रह गया.

मुझे वयो कूटा! मैं प्रिंसिपल सर की गलतफहमी का शिकार हो गया. शायद यही है, करे कोई भरे कोई. मुझे अपना बचाव करने का मौका ही नहीं मिला. तन से ज्यादा मन में दर्द हुआ. खैर स्कूल के बाद मेरा मन हल्का हुआ जब सोम्यब्रत ने आकर मेरा हाथ थामा और कंध सँसरी यार मुकेश। मेरी वजह से तुम्हें इतनी मार पड़ी. अच्छा. चलो आज मेरे घर चलते हैं. साथ में टिफिन खाएंगे. नुके दोस्ताना व्यवहार की वजह से मैं सब कुछ भूलकर उनके साथ ही लिया.

सोम्यब्रत के घर गया तो अँखे खुली की खुली रह गई! उनका छाटर एक बड़ी इमारत की पूरी तीसरी मंजिल पर फे ला हुआ था. घंटी बजते ही एक नीकरानी ने दरवाजा खोला और सोम्यब्रत की पीठ से कितानों का बैग उतार लिया. हमें नारता दो, भूख लगी है. सोम्यब्रत बोला. तुम हाथ-मुँह धोकर आओ बाबू मैं मेज पर खाना लगा रही हूँ. यह कहकर वह अंदर चली गई. दरवाजे से अंदर आते ही मैंने झाँक रूम देखा, करीने से सजा हुआ. स्टैंड पर एक बड़ा सजा टीवी, एक वीसीडी लेयर के साथ. उसके बगल में ड्राइनिंग एरिया था, बीच में एक बड़ी सी ड्राइनिंग टेबल, एक तरफ फ्रिज. फ्रिज के बगल में कोल्ड ड्रिंक्स की बोतलें से भरा एक कैरेट रखा था. मैंने रसोई में एक रसोइया को देखा. शायद वह हमारे लिए नारता बना रही थी. रसोई के दोनों ओर दो शयनकक्ष थे. एक में मैंने सोम्यब्रत की माँ को बिस्तर पर बैठकर पत्रिका पढ़ते देखा. दूसरा कमरा सोम्यब्रत का था. हर कमरे में एक एयर-कूलर लगा था. मैं सोच भी नहीं सकता था कि सबसे अलग-अलग कमरे होंगे। माता-पिता, भाई-बहन और हम पांच लोग एक ही कमरे में रहते हैं. उनके बाथरूम भी अलग-अलग हैं. सोम्यब्रत के कमरे में घुसने हुए मुझे शर्म आ रही थी. बिस्तर पर सफेद चादर करीने से बिछी थी, स्टडी टेबल अच्छी तरह से सजा हुआ था, और उस पर एक कंप्यूटर रखा था. मैं सोच भी नहीं सकता था कि किसी के पास अपना कंप्यूटर हो! कमरे में कहीं घुल नहीं थी. वही नीकरानी झाड़ू-पोछा लगा रही थी. इसी बीच, हमारे लिए गरमागरम

चाउमीन से भरती प्लेटें और रसगुले के कटोरे आ गए. फ्रिज से कोल्ड ड्रिंक्स की दो बोतलें निकलीं. मैंने पेट भर खाया और थोड़ी देर बाद उस दिन के लिए अलविदा कह दिया.

मैं अपने अस्त-व्यस्त, सादे घर लौट आया, लेकिन सोम्यब्रत की जीवनशैली मुझे लुभा रही थी. पर अंदर ही अंदर मुझे पता था कि उनके बराबर होना एक सपना था. क्योंकि मेरे पिता लगभग छह महीने में उतना कमा लेते थे जितना सोम्यब्रत के पिता एक महीने में कमाते थे. खैर, उस दिन से मैं सोम्यब्रत का चेहंता बन गया. मैं अक्सर उनके घर जाता था और उनकी शानो-शौकत का आनंद लेने का कोई मौका नहीं छोड़ता था. समय के साथ, हम सातवीं कक्षा में पढ़ोत्रत हो गए. सोम्यब्रत के घर मेरा आना-जाना बढ़ गया. मैं अपनी छुट्टियों की दोपहरें उनके साथ आराम से बिताता. कूलर की ठंडी हवा में बैठकर हम वीसीडी वाली

नई फिल्में देखते. हालाँकि हमारे शहर में दो टॉकीज थीं, सोम्यब्रत का परिवार वहीं नहीं जाता था क्योंकि वे उनके स्तर के नहीं थे. इसके बजाय, वे सीडी खरीद कर घर पर ही फिल्में देखते. जब भी कोई अच्छी फिल्म

रिलीज होती, वे कार किराए पर लेकर बनारस जाकर उसे देखते. हम घर के बने पोपकोर्न और कॉफी या कोल्ड ड्रिंक्स के साथ फिल्में देखते थे. इन्टरनेट होने के कारण लोड शीडिंग की कोई चिंता नहीं थी. शाम को सोम्यब्रत

मुझे हमारे इलाके की महंगी खाने की दुकान मिटाई महल से तरह-तरह के स्वादिष्ट खाने खरीदने ले जाता. मुझे इसमें से अपना हिस्सा जरूर मिलता था. मैंने पहली बार उनके घर में पिज्जा खाया. हालाँकि मेरा परिवार पारंपरिक रूप से पूरी तरह शाकाहारी है, फिर भी मैंने एक बार उनके घर में मटन का स्वाद चखा था. मैं खुद को इस लालच से नहीं रोक पाता था.

इस अनमोल दोस्ती का भी एक नकारात्मक अंश है. मैं अपने बचपन के बाकी दोस्तों से दूर होने लगा. क्योंकि तब तक मैं खुद को उनसे भिन्न समझने लगा था. मुझे घर का माहौल भी पसंद नहीं था. ऐसा लग रहा था जैसे मैं साहित्य सम्राट् मंश्री प्रेमचंदजी की कहानी नशा का पात्र थीर बन गया हूँ. लेकिन सबसे बुरी

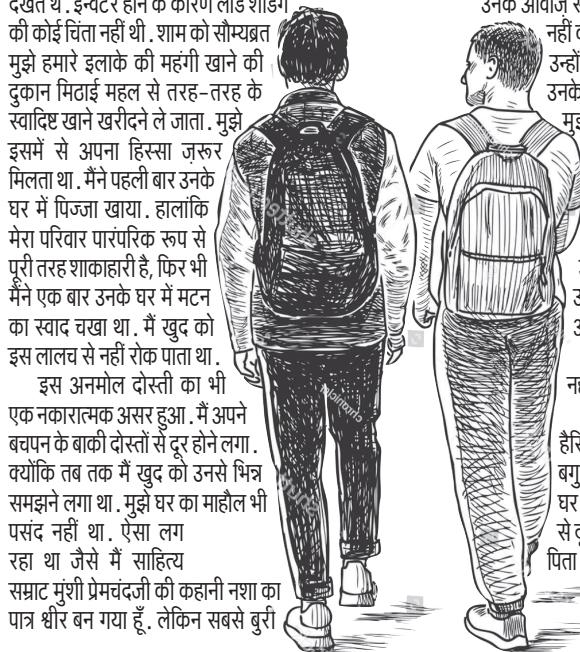
बात यह थी कि इस चक्र में मेरी पढ़ाई भी चोपट होने लगी थी. यह देखकर एक दिन हिंदी के शिक्षक ने कहा. सुनो मुकेश, जिससे तुम इतना घुल-मिल रहे हो वह एक अमीर बाप का बेटा है. उसे भविष्य की कोई चिंता नहीं है. तुम्हारे पिता तुम्हें एक ही कक्षा में दो बार पढ़ाने का खर्च नहीं उठा सकते. जब तक समय है, खुद पर काबू रखो. मैंने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया.

उस समय, एक सुबह जब मैं स्कूल जाते हुए सोम्यब्रत को बुलाने गया, तो उसने कहा कि उसका स्कूल जाने का मुझ नहीं है. उसने मुझे भी न जाने को कहा. उसने यह भी कहा कि वह एक सीडी लाया है, हम साथ में नई फिल्में देख सकते हैं. क्या यह लुभावना प्रस्ताव तुकराया जा सकता है. उस दिन हम सोम्यब्रत के कंप्यूटर पर फिल्म देखने बैठ गए. किसे पता था कि आज मुझे निराशा हाथ लगेगी. जब फिल्म शुरू हुई, तो पता चला कि यह एक अश्लील फिल्म थी. मैंने ऐसी फिल्मों के बारे में सुना तो था, पर कभी हिम्मत करके देखने की कोशिश नहीं की. लेकिन मैं ऐसे फिल्मों के पोस्टर चोर-छिपे सड़क किनारे की दीवारों पर या सिनेमाघरों के सामने देखा करता था. सोम्यब्रत भी हैरान था! दुकानदार से जरूर कोई गलती हुई थी. लेकिन वरिष्ठ चीजें देखने की उत्सुकता शायद कभी शांत नहीं होती. हमारी उमरी हुई दो जोड़ी ऑखें कंप्यूटर स्क्रीन पर चिपकी हुई लग रही थीं. मुझे अपने शरीर में कुछ बदलाव महसूस हो रहा था. सॉस तेज हो रही थीं. सिनेमा से आ रही कुछ अजीब सी ध्वनियाँ से मुश्किल पैदा हुईं. हम इतने उत्साहित थे कि सोम्यब्रत की माँ कब आ गई, पता ही नहीं चला. उनके आवाज से हम सामान्य हुए. वे कैसी आवाज है कुछ नहीं, कुछ नहीं कहते हुए सोम्यब्रत ने जल्दी से कंप्यूटर बंद कर दिया.

उन्होंने मुझे पूछा. तुम्हारा नाम क्या है मैं बहुत दिनों से उनके घर आता-जाता रहा हूँ, पर आज पहली बार उन्होंने मुझसे बात की थी. मैंने अपना नाम बताया तो दूसरा सवाल. तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं. इलेक्ट्रीशियन. मेरा जवाब सुनकर उनकी भी है तन गई. सोम्यब्रत के पिताजी बैंक मैनेजर हैं. सौभाग्यवश, इधर आओ, कुछ बात करनी है. यह कहकर वह उनके कमरे में चली गई. सोम्यब्रत भी इरते-इरते उनके पीछे-पीछे गया. तभी मुझे सोम्यब्रत की माँ की आवाज साफ सुनाई दी. किसके साथ संगति कर रहे हो दोस्ती करने से पहले अपनी हैसियत का ख्याल नहीं करते..

ये शब्द सुनकर मेरा मोहभंग हो गया. अपनी हैसियत का पहसास हुआ. मुझे पता चला कि कौन और बगुले में दोस्ती नहीं हो सकती. मैं सिर झुकाकर उनके घर से निकल पड़ा. उस दिन से मैंने धीरे-धीरे सोम्यब्रत से दूरी बढ़ा ली. जैसे-जैसे साल बीतते गए सोम्यब्रत के पिता का ट्रांसफर हो गया और वे चले गए. सोम्यब्रत मेरे जेहन में बस एक याद बनकर रह गया.

## हैसियत



### लघुकथाएं

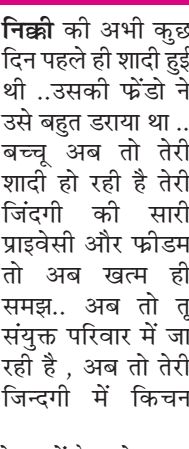


रेखा शाह आरबी

और बच्चे संभालना ही रहेगा.

शादी के चौथे दिन ही सभी मेहमानों के जाने के बाद नीचे गली में कोई फेरीवाला आवाज लगा रहा था. शायद लाख की चूड़ियाँ बेच रहा था ...लाख की चूड़ियाँ ले लो... लाख की चूड़ियाँ, निक्की की सासू मां शायद पहले से उस फेरी वाले को जानती थी, अतः वह नीचे चली गई चूड़ियाँ लेने, निक्की भी अपने कमरे में आराम करने के लिए आ गई, नई बहु थी जाकर चूड़ी लेने में संकोच था, और वैसे भी उसे शादी में बहुत सारी चूड़ियाँ अभी मिली थी तो उसकी जरूरत भी नहीं थी. शाम को वह खाना बनाने में लग गई, लेकिन उसे हल्का-हल्का फीवर था, खाना बनाकर वह अपने रूम में मेडिसिन लेने के लिए चली आई, अभी वह मेडिसिन

### निर्मूल आशंका



निक्की की अभी कुछ दिन पहले ही शादी हुई थी ...उसकी फ्रेंडो ने उसे बहुत डराया था .. बच्चा अब तो तेरी शादी हो रही है तेरी जिंदगी की सारी प्राइवेंसी और फ्रीडम तो अब खत्म ही समझ... अब तो तू संयुक्त परिवार में जा रही है, अब तो तेरी जिन्दगी में किचन

खोज ही रही थी, तब तक उसकी सासू माँ सुषमा उसके कमरे में चली आई ... निक्की बेटा... देखो तो यह चूड़ियाँ मैं तुम्हारे लिए ली है क्या पसंद है?

निक्की चूड़ियाँ लेकर देखने लगी उसे वाकई बहुत पसंद आई थी, उसकी सास की पसंद वाकई काबिले तारीफ थी, सुषमा ने उसके चेहरे की ओर देखा तो वह बोली... क्या है बात है निक्की बेटा.. आखिर तुम्हारा चेहरा इतना बुझा क्यों है? उन्होंने उसके माथे को छुआ तो चौंक कर बोली... तुम्हें इतना बुखार है और शाम से इतना काम कर रही हो एक बार बता देती... हम सब लोग मिलकर कर लेंगे.

निक्की को दवाई देने के बाद और आराम करने के लिए बोलकर नीचे चली गई और उस दिन एक भी काम को छूने नहीं दिया.

निक्की कमरे में बैठे हुए सोच रही थी.. मां भी चेहरे को देखकर अंदाजा लगा लेती थीं कि मैं बीमार हू.. और सासू मां भी चेहरे को देखकर मेरे बीमार होने का अंदाजा लगा ले रही हैं. मां भी मेरे ऊपर क्या अच्छा लगेगा उस हिसाब से दिल से चूड़ियाँ लाती थीं और सासू मां भी दिल से लाती हैं. आखिर दोनों में अंतर क्या है... मेरी फ्रेंड सब बेकार में बकवास करके मुझे डरा रहीं थीं... सास और मां में कोई अंतर नहीं है.. बुखार का बावजूद निक्की मुस्कुराने लगी आखिर उसे ससुराल में मां मिल गई थीं.

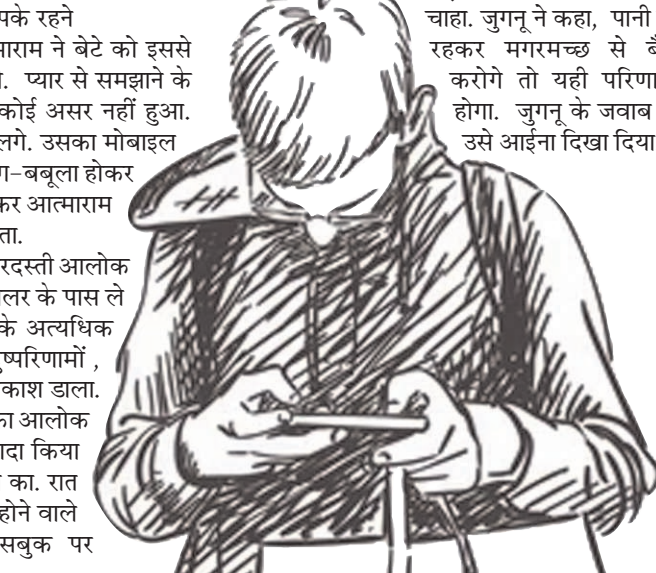
### सोशल मीडिया!



अशोक वाधवाणी

को दिन-रात मोबाइल पर चिपके रहने की लत से चिंतित पिता आत्मराम ने बेटे को इससे दूरी बनाए रखने की सलाह दी. प्यार से समझाने के बावजूद आलोक पर उसका कोई असर नहीं हुआ. अब वे उसे डांटने-फटकारने लगे. उसका मोबाइल छीनने लगे. इससे आलोक आग-बबूला होकर चीखने-चिल्लाने लगा. तंग आकर आत्मराम को मजबूरन मोबाइल देना पड़ता.

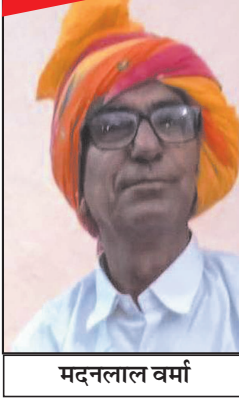
युवा आलोक रोजाना सुबह उठकर ब्रश करने के पहले मोबाइल खंगालता. वाट्सएप से शुरू किया हुआ उसका सफर फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्यूटोर तक पहुँचा. देखते-देखते फेसबुक पर 5000 फ्रेंड्स बन गए. आभासी दुनिया का स्टार बन गया. आलोक



को फोन करके कारण जानना चाहता. जुगनू ने कहा, पानी में रहकर मगरमच्छ से बैर करोगे तो यही परिणाम होगा. जुगनू के जवाब ने उसे आईना दिखा दिया.

## विलुप्ति की कगार पर छल्ला बोलो और अडल्या-घडल्या

### परंपरा



मदनलाल वर्मा

सभ्यता और संस्कृति के विकास में पर्व या उत्सवों का महत्वपूर्ण स्थान है. कार सुदी पड़वा (प्रतिपदा) से केल्वा पुनम (शरद पूर्णिमा) तक मालवा के ग्रामीण क्षेत्रों के गाँवों में बरसों से प्रथा प्रचलित थी छल्ला - बोला व अडल्या - घडल्या. गाँव के गली-मोहल्लों में अविवाहित लड़के अलग-अलग टोली में छल्ला - बोला मांगते हैं. इसी तरह अडल्या - घडल्या में भी लड़कियाँ दशहरे से पूनम तक समूह में गाती हैं. एक लड़की के सिर पर छिद्रयुक्त घड़ा रखती हैं, जिसमें दीपक जल रहा होता है. फिर घर-घर जाकर गाते हुए अनाज व पैसा एकत्र करती हैं.



छल्ला बोलो गाते बच्चे

बताना असंभव है. छल्ला एक लोकगीत शैली है. कहते हैं, यह गीत एक नाविक के बेटे की कहानी है, जो दुर्भाग्य से एक दिन नदी में डूब जाता है. यह गीत छल्ला के अपने इकलौते बेटे छल्ला को खोने के दुख को बयां करता है. इस गीत को कई गायकों ने गाया है. इसमें पीढ़ी दर पीढ़ी बच्चों की सहभागिता बनी हुई है. गाँवों की संस्कृति और परंपराओं में बसती है भारतीय संस्कारों की आत्मा.

आधुनिकीकरण और तकनीकी क्रांति ने नगरीय संस्कृति के बहाने पश्चात्य संस्कृति को बढ़ावा देने पर अरुण के माँका दिया है. इसके बाद भी ग्रामीण अंचलों में आज भी परंपराओं के नाम पर कई संदेश और शिक्षा बची है. त्योहारों के देश भारत में हर 5-50 कोस की दूरी पर परंपराओं का स्वरूप, खानपान, रहन-सहन, वेशभूषा, बोलचाल और बोली भी बहुत कुछ बदली-बदली सी नजर आती है. शाम होते ही गीत गाते हुए

घर-घर पहुँच दान लेते हैं. लड़के ज्वार के पौधे और लड़कियाँ छंद किए हुए मिट्टी के घड़े लेकर निकलती हैं. 5 से 12 साल तक के बच्चे अपनी तोतली व स्थानीय भाषा में छल्ला बोला गाते हैं. वही कई बच्चे घास-फूस बांधकर रीछ - वानर बनकर नृत्य कर ग्रामीणों को आकर्षित करते हैं. ग्रामीण जन उन्हें अनाज गेहूँ, ज्वार, मक्का, मूँगफली और नगद राशि भी देते हैं. बालक (बालिका) अनाज और पैसे का संग्रहण कर पूनम पर भोज का आयोजन करते हैं.

कहीं - कहीं इसे रावण का नुका भी करते हैं. राम द्वारा रावण के मारे जाने पर उसका नुका (मौसर) किया जाता है. नर्मदा किनारे नेमावर कजौद, खालेगाव, कांटाफोड़ से सटे ग्रामीण क्षेत्रों में नुका कार्यक्रम होता है. यहाँ मिट्टी का रावण बनाया जाता है. उसके प्रतीकात्मक वध के बाद मिट्टी को बच्चे घर ले जाते हैं. फिर टैसू के रूप में आकृति बना सजाते हैं. कई बच्चे बक्से में रख लाइव लगा आकर्षक रूप में सजाते हैं. इसकी शुरुआत दशहरे के दूसरे दिन से होती है. रोजाना शाम को गलियों व चौराहों पर टैसू गीत गूँजते हैं. अपने - अपने टैसू लेकर बच्चे नाच-गाने के साथ छल्ला (दान) मांगते हैं. बच्चों के अलग-अलग समूह को कहीं से पैसा, तो कहीं से दाल, आटा और चावल मिल जाता है. बहुत सी सामग्री इकट्ठा हो जाती है. नुत्ते में दाल-बाटी, चूरमा बनाया जाता है. हाटपिप्ल्या, चाण्डा क्षेत्र के ग्राम गुराडिया कला में यह परंपरा है कि यहां के तीन ब्राह्मण परिवार भरजी, चौबदार व व्यास परिवार द्वारा अपनी - अपनी बारी अनुसार प्रतिवर्ष काली मिट्टी से रावण की प्रतिमा बनाई जाती है. विश्वकर्मा मंदिर के पास विधि - विधान से पूजा की जाती है. तोमर परिवार तलवार से रावण की नाभि भेदकर वध

किया जाता है. वध के बाद मिट्टी बच्चे घर ले जाते और इसका छोटा सा पुतला बनाकर बच्चे खोखे (बक्से) में सजा कर प्यार से पूनम तक रोज रात में घर-घर टैसू गीत गाते. टैसू आया टैस से ... पैसा निकालो जब से रीछ - वानर बनकर नृत्य कर ग्रामीणों को आकर्षित करते हैं. ग्रामीण जन उन्हें अनाज गेहूँ, ज्वार, मक्का, मूँगफली और नगद राशि भी देते हैं. बालक (बालिका) अनाज और पैसे का संग्रहण कर पूनम पर भोज का आयोजन करते हैं.

अ. लडको के छल्ला गीत- 1 छल्ला छपाजी की के डेडी रे नापा जी की गाय, धीली गाय - गाय लडी के तोड़ी शुधरमाल ... छल्ला बोलो ... 2. लिय्यों छव्यों आँगणों रे, तार - तार बिच्छू जाय, नानी भाभी के काटयों के, अर - अर करती जाय ... छल्ला. 3. काला खेत में कुदालों रे, नौ माणी को डूँड, चिकी मेलीगी पानो, के घड्य्यों बदरियों ऊँट ... छल्ला ...

ब. लडकियों के लोकगीत- अलडयों - घलडयों लाडलो, सेरी रमते जाय रे भई, सेरी लागी उंररा, चू - चू करता जाय रे भई, एक और बानगी है - अनी लयाँ पनी लयाँ, लाख रुया की लाडी लायो, घाघरा की घेर लायो, बीछ्या की झमझोल लायों, देती होतो दे दईओ पड़ोसन ...

निमाड़ के लोकगीत- कुआँ की मेंढकी ने, तीखा - तीखा कान. सासू बरू लडी पड़ी, काट खाया कान ... छल्ला ... 2 सोला बाटी चूल्हा पाछे, फिर भी मारे नाल ... छल्ला. 3 नदी - नदी दिया बले, कूण जनावर जाय, हरण को बच्चों छलांग मारे जा ... छल्ला ... इसी प्रकार लडकियों के द्वारा गाए जाने वाले गीतों में बाई बड़ी घर देख्यों जैसे अनेक कर्ण प्रिय गीत शामिल हैं. पूनम (पूर्णिमा) पर इन लोकगीतों की आवाज धम जाती है.

### क्लास by बड़े भाई

## भिड़े तो पाएंगे, बचे तो खोएंगे



संदीप द्विवेदी कवि/प्रेरक वक्ता/स्क्रिप्ट ट्रेनर

छोटे भाई, जीवन में जिस तरह मृत्यु निश्चित है उसी तरह जीवन में चुनौतियाँ निश्चित हैं. इसे हम जितना जल्दी स्वीकार लें उतना अच्छा है. कुछ चुनौतियों को हम अपने अनुभव और ज्ञान से सहज सुलझा लेते हैं लेकिन कुछ चुनौतियाँ हमारे सारे अनुभव और ज्ञान को चुनौती देने वाली होती हैं.

इन चुनौतियों से दो तरह से हम सब निकला करते हैं. पहला बचकर और दूसरा कुछ हासिल कर. घाव तो दोनों में लगते हैं लेकिन कुछ लोग चुनौती को कुछ बड़ा हासिल कर डालते हैं. वो सही मायने में चुनौती को जवाब देने वाले माने जाते हैं. बचकर निकलने वालों को चुनौती भी परेशान नहीं करती.

अब बात यह है छोटे भाई कि चुनौतियों को अवसर में कैसे बदला जाए तो आपको एक चुनौतियों के प्रति आपको एक नजरिया देता हूँ. यदि आपने चुनौतियों से घबराने के बजाय उस नजरिए से भिड़ेंगे तो पूरा विश्वास है कुछ बढ़िया हासिल करके निकलेंगे.

जब भी कोई चुनौती आपने सामने खड़ी हो तो यह विश्वास कीजिए कि वो आपके पास आपदा नहीं अवसर लेकर आई है. यह नजरिया रामजी को रावण की नाभि कुंड का रहस्य पता लग जाने जैसा होगा. इससे आपके भीतर चुनौती से डर नहीं बल्कि उसमें अवसर ढूँढने का हौसला बलवती होगा. अब धैर्य के साथ आप उससे सामना करने के लिए जो हथकंडे अपनाएँ उसी में से आपके लिए अवसर का पिटारा खुलेगा. उदाहरण के लिए, कोरोना काल में जब मार्केट की आवश्यकता पड़ी तो कई लोग मार्केट घरों में बनाने लगे थे और आपदा में आमदनी का एक माध्यम ढूँढ लिया था. आपको पता होगा लोगों ने उस समय खूब पैसे बनाए. सब कुछ जब बंद हो गया था तो अनलाइन क्लास खोलकर लोगों ने पढ़ने पढ़ाने का रास्ता खोजा और न जाने कितने शिक्षकों को लोगों ने उसी समय से जाना और चुनौतियों को मुहटोंड जवाब दिया. इसी बीच कुछ लोग ऐसे भी रहे जिन्होंने इस आपदा में बस किसी तरह समय काटते रहे. छोटे भाई, कहना यह चाहता हूँ कि चुनौतियों से अवसर हमारे नजरिए से निकलता है. भिड़ेंगे तो कुछ बड़ा पा जाएंगे, बचेंगे तो कुछ बड़ा खो जाएंगे. बस इतनी सी बात है, यही कहना था .. धन्यवाद.

### कविता

## सेनापति



बिन्दु तिवारी

बूढ़ी औरतें, होती हैं सेनापति, पुरुष वर्ग की सेना की.

वह होती हैं, पुरुष द्वारा लिखित संविधान की नीति निदेशक तत्व, वह बनाए रखती हैं उस संविधान के सिद्धांत, आदर्श और जीवन्तता

जिसके मूल में घोटती जाती है, नई अंकुरित हुई औरतों के सपने, इच्छाएँ और अधिकारों को. और अंततः वह सिद्ध होती हैं संस्कृति, संस्कार और परंपरा की संवाहक

पर अब बूढ़ी औरतें, त्यागपत्र दे रही हैं अपने इस पद से. अब औरत ही औरत की दुश्मन होती हैं इस मुहावरे को मिटा कर वह गढ़ रही है नया मुहावरा.